चारण समाज में जमर परंपरा: एक ऐतिहासिक अध्ययन

पीएच.डी. उपाधि हेतु प्रस्तुत रूपरेखा

(Synopsis)

शोधार्थी

गोपाल दान

इतिहास विभाग,

ज्योति विद्यापीठ महिला विश्वविद्यालय, जयपुर

Outline of the proposed research work

प्रस्तावित शोध की रूपरेखा

1. Name of scholar	:	**GOPAL DAN**
2. शोधार्थी का नाम	:	गोपाल दान
3. Title of the Research		Jamar Tradition In Charan Community: A Historical Study
शोध का शीर्षक	:	चारण समाज में जमर परंपरा: एक ऐतिहासिक अध्ययन
4. Location	:	**ज्योति विद्यापीठ महिला विश्वविद्यालय, जयपुर**

5. **प्रस्तावित शोध का परिचय एवं महत्व** :-

मरस्या तो मोटे मते, सो जग कहे सपूत ।

जिस्यां तो देस्यों जरूर जुल्मया रे सर जूत ।।

श्री शंकर दान सामोर

मध्यकालीन भारत संघर्षों और युद्धों का भारत था। शायद ही ऐसा कोई दिन गया हो जब भारत के किसी न किसी खंड में कोई युद्ध न चल रहा हो। साम्राज्य विस्तार करने, उपजाऊ जमीन और जल स्रोत पाने, पशुधन और रियाया की रक्षा करने, शरणागत की रक्षा करने, वचन का पालन करने जैसे हजारों कारणों ने मनुष्य को अपनी वीरता, साहस और बहादुरी दिखाने का मौका दिया

और यहां के जीवत मानस ने मरने का भी महोत्सव मनाया। हर एक गांव वीरता की पराकाष्ठा का साक्षी रहा है। इसलिए जेम्स टॉड ने राजपुताना के बारे में लिखा "राजस्थान का कोई छोटा-सा राज्य नहीं, जिसमें धर्मोपत्ती जैसी रणभूमि न हो और शायद ही कोई ऐसा नगर मिले, जहाँ लियोनीडस जैसा वीर पुरुष उत्पन्न न हुआ हो । यहाँ पुरुषों के साथ स्त्रियों के बलिदान की लाखो कथाये जन मानस में घुली हुई है | समाज और मानवता के आदर्शों की रक्षा के लिए जिन लोगो ने अपनी जान की बाजी लगाई उसकी कृतज्ञ समाज ने देवरी, चौतरी, समाधि, देवल और चौकी बनाकर पूजा की और अपने गीतों में उन्हें अमर बना दिया। कई जातियों में "परोपकार पुण्याय पापाय परपीड़नम "के आदर्श पर चलकर अपनी भूमिका निभाई है। चारण जाति में भी इसी भावना के साथ स्त्रियों ने जमर किये।

भारत में मौर्य साम्राज्य के केंद्रीकृत शासन के पतन के बाद पहली शताब्दी ईसा के आसपास छोटे-छोटे राज्यों का उदय हुआ तथा उसी समय कई विदेशी आक्रमणकारी जातियां जैसे शक, कुषाण, हूण पहल्व आदि भारत में आए। इस का परिणाम यह हुआ की शासकों ने केंद्रीकृत शासन प्रणाली को धीरे धीरे विकेंद्रीकृत शासन प्रणाली तथा कुल संबंधों आधारित प्रशासन पर जोर दिया। इससे शासन और प्रशासन में दो महत्वपूर्ण आयाम जुड़े पहला छत्रप प्रणाली का उदय । जिसका आधार अपने निकट कुलों और महत्वकांक्षी लोगों को भाई बंध के माध्यम से शासन और सत्ता के साथ बनाए रखना था।

मनुष्य ने हमेशा जुल्म का प्रतिकार किया है। जब जब शक्तिशाली लोगों ने निर्बलों को बल से छला तब तब कोई न कोई रक्षक की भूमिका में आया है। गीता में श्री कृष्ण भी इसी भाव को प्रकट करते हुए जुल्म के विरुद्ध आशा भाव को संचारित करते है।

"यदा यदा हि धर्मस्य ग्लानिर्भवति भारत

अभ्युत्थानमधर्मस्य तदात्मानं सृजाम्यहम् ॥४-७॥

परित्राणाय साधूनां विनाशाय च दुष्कृताम्- ।"

धर्मसंस्था- पनार्थाय सम्भवामि युगे युगे ॥

प्राचीन समय से जब राजतंत्र शासन कायम था तब शासक की व्यक्तिगत बुद्धि और क्षमताएं ही राज्य की दिशा और दशा तय करती थी तब से अच्छे और बुरे शासकों के दौर आते रहे। बुरे शासकों को मुकाबला कर्मठ और स्वाभिमानी लोगों ने प्राणों की बलि देकर किया। मध्यकाल में जब भूमि और पशुधन के लिए संघर्ष बढ़े तब कई बार स्थापित मान्यताएं तार तार हुई। लेकिन पुनः कोई बांका वीर या वीरांगना अपने प्राण पण से जग भलाई कर लोगो में आशा का बीज संचार करते रहे है। जहाँ पुरुषों ने तलवार की मूंठ और अपनी मूँछ पर ताव दिया वही स्त्रियां भी अपने बलिदान से पीछे नही रही। मध्यकाल का इतिहास ऐसे उदाहरणों से भरा पड़ा है जब महिलाओं ने आगे आकर देश और कुल की लाज रखी और अपने सामाजिक दायित्व निभाये।धार्मिक लोगो द्वारा स्त्री को शक्ति के रूप में संस्थापित किया गया और यथार्थ में स्त्री ने हजारों लाखों प्रसंगों द्वारा यह दिखा दिया कि वह स्वयं शक्ति सरूपा है।

चारण जाति :-

उल्लेख वेद, पुराण, रामायण, महाभारत आदि प्राचीन ग्रंथ करते हैं। शब्द की उत्पत्ति के अनुसार चार्यन्ति कीर्ति मिति चारणाः (कीर्ति को आगे बढ़ाने वाला चारण है।) पुराणों में चारणों को पुराणिक चारण की संज्ञा दी गई है। उसे स्वर्ग लोक का निवासी बताया गया है। डॉ भगवती प्रसाद सिंह बिसेन ने चारणों का स्थान गंधमादन पर्वत बताया जहां से स्वर्ग का रास्ता जाता है। यहीं से चारण राजा पृथु के साथ पृथ्वी लोक पर आए। राजा पृथु ने उन्हें तेलंग प्रदेश दिया

और गढ़पति पद से विभूषित किया। झवेरचंद मेघानी ने चारण को राजपूतों की कीर्ति सागर की गर्जना करने वाला, किलो की चाबी का रखवाला, और राजपूतों के ब्रहमचर्य का चौकीदार कहा है। राजपूत चारणों को सम्मान में गढ़वी, प्रोतपात और कविराज जैसे विशेषण से अभिहित करते थे तथा भूमि अनुदान में गांव देते थे

चारणों द्वारा प्रतिरोध के कई तरीके आजमाए गए। जिसमे जमर, तेलिया तागा धागा और धरना प्रमुख थे। इसका उद्देश्य स्वयं को कष्ट देकर मृत्यु देकर भी पर उपकार किया जा सके तो जायज है। चारणों ने हमेशा प्राण देकर भी विश्वास बनाये रखने की चेष्टा की है। "प्राणादपि प्रत्ययो रक्षितव्य " जिनका आधार सत्याग्रह था। जिस प्रकार आधुनिक काल में महात्मा गांधी ने सत्याग्रह की राह अपनाई और अन्यायी के हृदय परिवर्तन पर बल दिया उसी प्रकार चारण जाति में भी हृदय परिवर्तन करने के लिए विभिन्न तरीके अपनाये गए। महात्मा गांधी का सत्याग्रह सत्य के लिए ,सत्य के साथ और सत्य के द्वारा था। उसी प्रकार चारणों ने भी सत्य के मार्ग का अनुसरण किया। जब जब शासकों या सत्ताधीशों ने दुर्बुद्धि के वश में होकर लक्ष्मण रेखा को लांघा तब तब चारणो ने तेलिया, तागा, धागा, जमर, आदि करके आत्म बलिदान दिया।

सांसन गांव :- चारण जब व्यापार करने के लिए वस्तुओं को एक जगह से दूसरी जगह ले जाते या पशुओं को चराने के लिए देशाटन करते तब उन्हें रियासतों द्वारा लगाए जाने वाले राह दारी शुल्क से उन्मुक्ति प्राप्त थी। शासक चारणों को राज कवि नियुक्त करता था वही युद्ध क्षेत्र में भी चारण मुख्य भूमिका निभाते थे सामान्य काल में उन्हें घुड़साल और गौशाला का प्रमुख नियुक्त किया जाता था साथ ही शासक का विश्वसनीय वर्ग होने के कारण घोड़ों की आवाजाही की सुरक्षा भी चारणों को सौंपी जाती थी

'जमरः स्त्री चेतना पुंज:- जमर चारण जाति की महिलाओं द्वारा किया जाता था। (अन्य जातियों जैसे राजपुरोहित और ब्राह्मण स्त्रियों ने भी किये पर एक परम्परा के रूप में चारण जाति में ही दृष्टिगत होता है) समाज मे जब जब प्रचलित मान्यताओं पर कुठाराघात हुआ, किसी के हक को छीना गया, किसी के मानवाधिकार का उल्लंघन किया गया या किसी की सम्पति पर डाका डाला गया तब न केवल पुरुष बल्कि स्त्रियों ने भी आगे बढ़ चढ़कर भूमिका निभाई है और उनका खात्मा किया है। सती, जौहर और जमर में दो बातें के अलावा कुछ भी समान नहीं है। पहला स्त्रियों द्वारा किया जाना, दूसरा अग्नि में प्रवेश करना। लेकिन जौहर और सती जहाँ पति के प्रति अनन्य भाव प्रकट करने का भाव है। इसमें पति की निशानी को साथ लेकर, जीने के उद्देश्य छीन जाने या शत्रु के हाथ न पड़ने के लिए किये जाते थे। वही जमर में समाज, कुल, गांव, ओर देश काल की मर्यादाओं के पालन का भाव है। इसलिए जमर हुई स्त्रियों की पूजा आज लोक देवी, शक्ति के रूप में की जाती है। चारण जाति में भी पति की मृत्यु के बाद सती होने के उदाहरण मिलते है लेकिन लोक मान्यता में सती से ज्यादा जमर करने वाली की पूजा और आस्था है । जमर के संदर्भ में कुछ धारणाएं न केवल लोक जीवन में गलत से बैठी हुई है बल्कि इतिहासकारों ने भी इसे सती के समक्ष मानकर और जबरन स्त्रियों को आग में झोंकने का बात कहकर इसके सही स्वरूप को सामने नहीं रखा है। वही एक यह भी धारणा है कि चारणों ने अपने विशेषाधिकार बनाये रखने के लिए मिली हुई सुविधाओं का दुरूपयोग किया। अपवाद स्वरूप कुछ घटनाएं ऐसी रही हो जब स्वार्थ के लिए सत्याग्रह का सहारा लिया गया हो लेकिन ऐसा किया जाने पर उसकी सामाजिक स्तर पर निंदा ही हुई है। आज भी जिन लोगों ने सत्य की राह पर चलकर अन्याय का सामना किया है वे लोगों की स्मृति में है और उनकी पूजा की जाती है। लोक मान्यता में उनके पर्चे गए जाते है ।

6. **शोध अंतराल(Research gap)** :-

अभी तक शोध लोक देवियां एवं लोक देवताओं पर ही किया गया है जिसमें प्रमुख प्रसिद्धि प्राप्त लोक साहित्य को ही प्रकाश में लाने का प्रयास किया गया परंतु राजस्थान में ऐसे असंख्य गुमनाम लोक साहित्य हैं जिस को प्रकाश में लाने की जरूरत है।

चारण जाति हमेशा से ही मातृसतात्मक रहा है और इस जाति के इतिहास में सैकड़ो देवियों ने जन्म लेकर लोक कल्याण के कार्य किए हैं तथा सामंतशाही के विरोध में रहकर शोषित वर्गों का समर्थन कर उनके अधिकारों की रक्षा हेतु अपने प्राणों की आहुतियां दी है। पश्चिमी राजस्थान और कच्छ गुजरात में ऐसे अनेक हिस्सों में आज भी सुना जाता है। परंतु इनको अभी तक प्रकाश में नही लाया गया है, मेरे शोध के माध्यम से जमर में प्राण को आहुति देने वाली देवियों को प्रकाशन के माध्यम से इतिहास में उचित स्थान प्रदान करने का प्रयास है

7. **उद्देश्य(Objectives)**:-

1. जमर परंपरा का ऐतिहासिक पृष्ठभूमि का अध्यन करना।
2. प्रस्तावित शोध के माध्यम से चारण की देवियो / नारियों का अध्ययन करना।
3. तत्कालीन समाज में जमर परंपरा के महत्व पर प्रकाश डालना।
4. सांसन ग्राम प्रणाली का अध्ययन करना।
5. आजादी के अमृत काल में गुमनाम नायिकाओ को मुख्य धारा में लाना।

8.**परिकल्पना(Hypothesis)**:-

1. जमर परंपरा शासक वर्ग के विरुद्ध एक प्रतिकार परंपरा के रूप में रही है ।
2. चारण देवियों द्वारा जमर के माध्यम से स्थानीय लोगों के पशुधन एवं जमीन की सुरक्षा की जाती थी ।
3. जमर परंपरा आत्मबलिदान, और सत्याग्रह के रूप में होती थी।
4. सैकड़ो देवियों द्वारा जमर प्रणाली के माध्यम से शोषण का प्रतिकार किया तथा सामाजिक समरूपता को स्थापित किया ।
5. जमर प्रणाली के समस्त अध्ययन के पश्चात महिलाओं की इतिहास में भूमिका नए सिरे से परिभाषित होंगी।

9.**स्रोत और प्रविधि(Methodology And Sources)**

प्रस्तुत शोध आयोजन राजस्थान की जनचेतना में चारण देवियों (जमर परंपरा के विशेष संदर्भ में।) पर आधारित है इस शोध कार्य में शोध सामग्री एवं स्रोत के रूप में प्राथमिक एवं द्वितीयक दोनों प्रकार के स्रोत को शामिल किया जाएगा प्राथमिक स्रोत जनश्रुतियां,लोक कथाओं एवं साक्षात्कार को शामिल किया जाएगा ।

द्वितीयक स्रोत के रूप में शोध विषय से संबंधित आधारभूत मुख्य सामग्री को चयनित किया जाएगा तथा विद्वानों, कवियों, इतिहासकारों और लेखकों द्वारा वर्णित पुस्तकों और पत्रिकाओं दस्तावेजों दोहों व जीवनियों का विभिन्न पुस्तकालय से संग्रह कर उनका विस्तृत अध्ययन किया जाएगा ।

शोध प्रविधि के तीन प्रकार होते हैं विवेचनात्मक ,वर्णनात्मक एवं मिश्रित , मेरे शोध कार्य में विधि के रूप में प्रथम दो विधियों का प्रयोग किया जाएगा ।

मेरे द्वारा शोध कार्य में सर्वप्रथम उपरोक्त सामग्री का आयोजन पूर्वक अध्ययन कर उन्हें वर्गीकृत और व्यवस्थित किया जाएगा। उसके पश्चात प्राप्त तथ्यों को विषय एवं अध्ययन अनुरूप वर्गीकृत कर उनकी सत्यता का परीक्षण व विश्लेषण कर राजस्थान की जनचेतना में चारण देवियों द्वारा जमर के योगदान को व्यवस्थित रूप से प्रस्तुत किया जाएगा।

- मेरे शोध कार्य में निम्न चरणों का उपयोग किया जाएगा।

  -शोध समस्या का चुनाव

  -शोध प्ररचना ।

  -संबंधित साहित्य का अध्ययन ।

  -शोध के लिए उपर्युक्त साहित्य का चयन ।

  -शोध के लिए चयनित सामग्री का अवलोकन ।

  -अवलौकिक साहित्य का लेखन।

  -प्रतिवेदन का प्रस्तुतीकरण ।

- शोध विषय के संदर्भ में जानकारी प्राप्त करने के लिए निम्नलिखित पुस्तकालयों का सहयोग प्राप्त किया जाएगा ।

  -केंद्रीय पुस्तकालय राजस्थान विश्वविद्यालय जयपुर

  -केंद्रीय पुस्तकालय जय नारायण व्यास विश्वविद्यालय जोधपुर

  -प्राच्य विद्या प्रतिष्ठान जोधपुर

  -मानसिंह पुस्तकालय मेहरानगढ़ दुर्ग जोधपुर

  -राजस्थान राज्य अभिलेखागार बीकानेर

  -चोपासनी शोध संस्थान जोधपुर

  -चारण साहित्य शोध संस्थान अजमेर

9. **शोधकार्य की अध्यायनुसार रूपरेखा**

(Tentative chapterwise details of the proposed research work)

:-

प्रथम अध्याय	-	परिचयात्मक
द्वितीय अध्याय	-	जमर परम्परा का अर्थ
तृतीय अध्याय	-	जमर परम्परा का ऐतिहासिक अवलोकन :3.1: जमर व जौहर में अंतर 3.2:जमर परंपरा और अहिंसा, अंतर समानता
चतुर्थ अध्याय	-	जमर करने वाली प्रमुख देवियां
पंचम अध्याय	-	तत्कालीन समाज में देवियों का महत्व
षष्ठ अध्याय	-	निष्कर्ष

संदर्भ ग्रंथ सूची(bibliography)

1.मोहनलाल जिज्ञासु: चारण साहित्य का इतिहास, प्रथम अध्याय ,जैन प्रकाशन जोधपुर

2. शंकर सिंह आसिया: पाबू प्रकाश महाकाव्य: राजस्थानी ग्रंथागार जोधपुर 2009

3. गिरधर दान रतनू दासोडी: शीला रखवाली जोर झणकली झाड़: charan.org चारण समागम पोर्टल 5 दिसंबर 2018

4. गिरधर दान रतनू दासड़ी:यह तो भी बेटियां भी उठा सकता है charan.org चारण समागम पोर्टल 11 अगस्त 2020

5. आहुवा सत्याग्रह, वंश भास्कर सूर्यमल मिश्रण charan.org चारण समागम पोर्टल 23अप्रैल 2016

6. भंवर सिंह सामोर: राजस्थानी शक्ति काव्य साहित्य एकेडमी नई दिल्ली 2015

7. गिरधर दान रतनू दासड़ी: हूं नी जोमा जमर करसी charan.org चारण समागम पोर्टल 10जुलाई 2018

8.भूपतिराम साकरिया , दुरसा आढा , ग्रंथावली" साहित्य संस्थान राजस्थान विद्यापीठ ,उदयपुर 1987

9.जसोल नाहरसिंह ,राजस्थान गुजरात रा चारण रै त्रागो अर त्याग री जूनी बाता ,राजस्थानी ग्रंथगार 2016

10. पटेल पूनाराम, राष्ट्रकवि दुरसा आढा का व्यक्तित्व एवं कृतित्व राजस्थानी ग्रन्थागार जोधपुर 2019

11.साधना, राजलक्ष्मी देवी ठाकुर कृष्णसिंहबारहठ शाहपुरा द्वारा विरचित चारण-कुल - प्रकाश, 102पंच रत्न कॉम्प्लेक्स बेदला रोड उदयपुर 2012

12.सामौर भवर सिंह, आहूवा का घटना, राजस्थानी ग्रन्थागार जोधपुर 2021

13. कनोता मोहन सिंह चांपावतो का इतिहास राजस्थानी ग्रन्थागार जोधपुर 2014

14. गोयल राम गोपाल क्रांति पथ के निर्माता , त्याग मूर्ति- देशभगत ठाकुर केसरीसिंह बारहठ शुभद्रा प्रकाशन जोधपुर 2013

15.रावत सारस्वत भारतीय साहित्य के निर्माता दूरसा आढ़ा साहित्य अकादमी नई दिल्ली 1983

16.रूणावत श्याम सिंह व शर्मा कृष्ण गोपाल ,चारण साहित्य परंपरा राजस्थान अध्ययन केंद्र राजस्थान विश्वविद्यालय जयपुर 2001

17.साधना राजलक्ष्मी क्रांतिकारी जोरावर सिंह बारहट अश्विनी कुमार प्रकाशन, उदयपुर 2017

18.मेनारिया पुरषोत्तम राजस्थानी साहित्य का इतिहास इनिक ड्रेडर्स जयपुर 1987